[काव्य-संग्रह]

मधुरिमा

चतुरंग

[काव्य-संग्रह]

हिन्दुस्तानी पत्रिका के लिए समीक्षार्थ
मधुरिमा
३०.११.८८

मधुरिमा

सावित्री ज्योति आश्रम
१२३ विन्ध्यवासिनी नगर कालोनी, महावीर रोड,
अर्दली बाजार, वाराणसी

● प्रकाशक : सावित्री ज्योति आश्रम
११३ विन्ध्यवासिनी नगर कालोनी, महावीर रोड,
अर्दली बाजार, वाराणसी

● मुद्रक : चित्रसेन प्रिंटिंग प्रेस
राहुल नगर, आजमगढ़

● मूल्य : पाँच रुपये

समर्पण

[स्वर्गीया माता की ममतामयी स्मृति को]

माता का आशीष प्रथमतः शाला है
मां के उपदेशों से हृदय उजाला है
श्वास और उच्छवास समर्पित चरणों में
अश्रु हास मिश्रित शब्दों की माला है।

अश्रु सिक्त शब्दों की माला
गूँथ श्वास के धागों में
पूज्य जननि को सादर अर्पित
जो पल पल उच्छ्वासों में।

जिनके ममतामय आँचल में
बीते शीत; ताप मधुमास
उन्हीं जननि को भेंट अकिंचन
अश्रु हास मिश्रित उच्छ्वास ।

दे करके आशीष अनेकों दोष गयीं जो भूल
उन माँ की ममता को अर्पित कुछ आँसू कुछ फूल।

जिनके आशीषों उपदेशों से यह पथ उजियारा है
उन्हीं चरण कमलों को अर्पित भावों की यह धारा है।

०

प्रिय पाठकों से

कविता भावों की अभिव्यक्ति का सबसे सुन्दर साधन मानी गयी है। इसी भावना को लेकर कुछ सुख और कुछ दुःख की मिली-जुली भावनाओं को बहुत ही सुगम भाषा के माध्यम से काव्य रूप मे ढालने का प्रयास किया है।

'चतुरंग' के माध्यम से मैंने अपने आस पास के परिवेश में घटित होती परिस्थितियों को आत्मसात करके, उनमें स्वयं अपने को लीन करके उन्हें काव्य का रूप देने का प्रयास किया है। प्रस्तुत संग्रह मे विभिन्न प्रकार की कवितायें हैं। अधिकांश में मैंने आधार स्वयं को ही बनाया है किन्तु सत्य कुछ और ही है। प्रायः रचनाकार जो भी लिखता है वह पूर्णतः भोगा हुआ ही नहीं होता अपितु अपने जीवन में पग-पग पर प्राप्त अनुभवों और संवेदना के धरातल पर रूपान्तरित किया हुआ भी होता है ठीक वैसा ही है मेरे साथ भी। यूं तो कोई भी कवि लेखक उसी घटना या परिस्थिति पर लिखता है जो या तो उसकी कोमल भावनाओं को झकझोर पाने में सक्षम हो या स्वयं उसके जीवन से मेल खाती हो क्योंकि कोई भी रचना तब तब नहीं रची जा सकती जब तक कि उसका वास्तविक आधार हृदय की गहराई तक न उतर जाये।

'चतुरंग' में छन्द बद्ध, मुक्त छन्द, परिवार नियोजन, और गजल रूप में बांधी हुई कविताओं का संकलन है। मेरा यह तुच्छ प्रयास कहाँ तक सफल हुआ है इसका प्रमाण तो मुझे मेरे प्रिय पाठक गण ही दे सकते हैं।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह काव्य जगत के विशाल प्रांगण में, समुद्र में बूँद के समान है। 'चतुरंग' निश्चय ही मेरी लेखनी का प्रयास है। इसे गहन अंधकार से निकाल कर देदीप्यमान काव्य जगत में स्थान दिलाने का पूर्ण श्रेय श्रद्धेय डॉ० कन्हैया सिंह जी को है एवं इसे उन तक पहुँचाने का सम्पूर्ण श्रेय श्रीमती सावित्री गौतम को न देकर संभवतः मैं अपने अन्तःकरण के साथ अन्याय करूँगी जिन्होंने मेरे अन्तर में सोई पड़ी भावना को जाग्रत किया, अभिव्यक्ति के पथ पर आगे बढ़ने में मार्ग-दर्शन किया। मैं आजन्म श्रद्धेय डॉ० कन्हैया सिंह जी एवं श्रीमती गौतम की आभारी रहूँगी।

- मधुरिमा

-o-

विषय-सूची

मुक्त छंद

परिवार-नियोजन

गजल

❀

माँ स्मृति तेरी

माँ स्मृति तेरी चन्दन सी
मन कानन को सुरभित करती
माँ स्मृति तेरी चन्दन सी।

मानस -पट पर स्पर्श सजग
कोमल से कोमलतर मेरे,
स्वप्नों में प्रति निशि आ आकर
सहलाता अंग - गात मेरे।

माँ स्मृति तेरी हिमगिरि सी
जीवन में शीतलता भरती
माँ स्मृति तेरी हिमगिरि सी।

तुझ संग क्षण बीते करुण मधुर,
तेरी ममता की लहर लहर
तुझसे जीवन - संदेश सुना
पग गिन - गिन रखे डगर-डगर।

मां स्मृति तेरी अचल सी,
प्रतिपल तन - मन रक्षित करती
माँ स्मृति तेरी अचल सी।

मम सुख तेरा वह जीवन था
मुझमें ही लीन रही क्षण क्षण,
हैं रोम रोम मां तेरे ही
तुझ संग बीते पल जीवन-धन।

माँ स्मृति तेरी अंजन सी,
प्रतिपल इन आंखों में सजती,
माँ स्मृति तेरी अंजन सी।

है व्यथा मेरी माँ मूक बधिर
भीतर ही भीतर रिसती है
ढाढ़स न किसी का सुन पाती
अंग-अंग में मौन विचरती है।

मां स्मृति तेरी चन्दन सी,
मन मंदिर में पूजित होती,
मां स्मृति तेरी चन्दन सी।

वसुधा सा तेरा हृदय जननि
आवाद असंख्यों अन्तर में,
मुख चन्द्र - चन्द्रिका सा दीपित
मस्तिष्क श्वास - स्पन्दन में।

मां स्मृति तेरी सतरंग सी,
जीवन - गति में है रंग भरती,
मां स्मृति तेरी सतरंग सी।

मां गहन घोर अंधियारे में
तुमने ही ज्योति जलायी थी,
तब सिन्धु हहरता आया जब
नौका भी पार लगायी थी।

मां स्मृति तेरी चुम्बन सी
ममता निर्झरिणी सी झरती,
मां स्मृति तेरी चुम्बन सी।

चंचल दृग ठहरे ठहरे मां
तकते हैं प्रतिपल शून्य सदा,
अन्तर की खोजा खोजी भी
क्या हो पायी है पूर्ण सदा।

मां स्मृति तेरी कंचन सी,
रीता अन्तः स्वर्णिम करती,
मां स्मृति तेरी कंचन सी।

●

लगा कर तुम्हीं से लगन नाथ अब तो

लगा कर तुम्हीं से लगन नाथ अब तो,
प्रणय गीत गाती सुनाती फिरूँगी।

नहीं ज्ञान तुमको किये यत्न कितने
कि तुम द्वार आओ, कि तुम द्वार आओ,
पलक पांवड़े अश्रु सिंचित बिछाये
कृपा कर चरण-धूलि आकर लगाओ।

लगा कर लगन अब तो मुख-चन्द्र से ही,
चकोरी बनी मैं निहारा करूँगी।
लगा कर तुम्हीं से लगन नाथ अब तो,
प्रणय गीत गाती सुनाती फिरूंगी।

तुम्हीं मेरे घनश्याम गणपति तुम्हीं हो,
तुम्हीं राम शंकर तुम्हीं विष्णु भी हो,
तुम्हीं हो उमा, शारदा वैष्णवी भी,
तुम्हीं पापियों के क्षमा-सिन्धु भी हो।

लगा कर लगन अब तो प्रिय दर्शनों की,
विरह गीत स्मृति में गाती रहूँगी।
लगा कर तुम्हीं से लगन नाथ अब तो,
प्रणय गीत गाती सुनाती फिरूंगी।

मधुर वीणा के तारों में झंकार हो,
कण्ठ गायक का तुम संग स्वर ताल हो,
तुम्हीं बंधन भी हो और तुम्हीं मुक्ति हो,
कहीं व्यवधान हो, कहीं अविराम हो।

लगा कर लगन मन के मोहन से अब तो,
बन के मीरा सदा गुनगुनाती रहूँगी।
लगा कर तुम्हीं से लगन नाथ अब तो,
प्रणय गीत गाती सुनाती फिरूंगी।

चरणों में शीश नवाते हैं

तुम तो कसम खा कर बैठे
हमसे ना कभी भी बोलोगे,
जो आये शरण में हम तेरी
तुम बन्द नमन ना खोलोगे।

सेवक से भूल हुई है क्या
भगवन वह तो बतला देना,
सेवक है तुम्हारा पापी यदि
सन्मार्ग उसे दिखला देना।

तुम दीन हीन के रक्षक हो
तुम दयावान हो, क्षमाशील,
तुम दुष्टों के संहारक हो
प्रतिपल तुममें ही रहूँ लीन।

पथ-बाधाओं से भरा हुआ
आँखों के आगे तिमिर घिरा,
अब कृपा तुम्हीं कर देना प्रभु
भँवरों में तुम्हारा भक्त घिरा।

कर शत्-शत् बार प्रणाम तुमें
चरणों में शीश नवाते हैं,
जगजीवन से अब दृष्टि मोड़
सेवा तेरी अपनाते हैं।

आती रुक रुक कर बयार

क्यों आती रुक-रुक कर बयार,
लौटा ले जाती छुपा प्यार,
क्यों आती रुक-रुक कर बयार।

आँखों की कोरों को छू छू,
पलकों की तालों में हिल-मिल,
क्या कुछ कह जाती है चुप-चुप
स्मृति मानस-पट पर झिलमिल।

कुछ लाती कुछ ले जाती है,
जब आती रुक-रुक कर बयार।

गीतों में सरगम का संगम,
श्वासें ज्यों गंगा-यमुना जल,
कर का कर से स्पर्श सजग,
पावन वृक्षों का पावन फल।

गंगा-यमुना सी निर्मल यह,
बह आती रुक-रुक कर बयार।

उठती माटी से मधुर गंध,
क्या टूट चुके हैं सभी बंध,
बँध बैठा तो अनजाने में,
आजीवन का वह मृदुबंधन।

लिपटी मृदुमधुर सुगन्धों में,
सिहरानी रुक-रुक कर बयार।

जब कभी मधुमास आये

जब कभी मधुमास आये।

वृक्ष पत्ते पीन रंगी
डाल पर कोयल भी गाये
याद बिछुड़े गीत संगी
तब सखी फिर क्यों न आये।

जब कभी मधुमास आये।

डाल झूलों से सजे और
आम में जब बौर आये
क्या न ऐसी मधुर बेला
भी तुम्हें हम याद आये।

जब कभी मधुमास आये।

स्वप्न चित्रित मोह माया
स्वप्न भी प्रतिदिन न आये
अंक में भर ली मधुर सुधि
भर नयन में जल जो लाये।

जब कभी मधुमास आये।

०

प्रीत की बतियाँ

दीप की लौ टिमटिमाती
जागते में स्वप्न पाती
स्वप्न की लड़ियाँ
अधूरी हैं अभी।

चन्द्रिका है गीत गाती
रात्रि के अन्तिम पहर में
गीत की कड़ियाँ
अधूरी हैं अभी।

चन्द्रमा की रैन बीती
चाँदनी संग-संग सजाकर
प्रीत की बतियाँ
अधूरी हैं अभी।

कुमुदनी ने नेत्र मूँदे
स्नेह पूरित अश्रु गीले
मिलन की घड़ियाँ
अधूरी हैं अभी।

कूक सुना दी कोयल ने
मोर का संदेश लेकर
नींद की घड़ियाँ
अधूरी हैं अभी।

मिल सका है क्या

मिल सका है क्या सभी को, प्यार का प्रतिदान जग में।

आँधियों के साथ चल
स्नेही सजाते स्नेह दीपक
सिन्धु-तल तक जा पहुँचते
चाहते जो हीर मुक्तक।

मिल सका है क्या किसी को, रत्न कोई पथ भटक के।

प्रीत कर आशा करो मत
प्रीत की डोरी बंधेगी
बिन चलाये नाव कोई
स्वयं नदिया में चलेगी?

चल सकी है क्या कोई भी, नाव मांझी से बिछुड़ के।

गिर चुकी सागर में नदिया
आ सकी है क्या निकल के
रख चिता पर एक अर्थी
वापसी का नाम मत ले।

मिल सका है क्या कोई जो, कहे अमृत स्वाद चख ले।

शून्य मंदिर में उजाला
एक दीपक कर सके
मन से पहले-तन के बंधन-
पर, कभी ना निभ सके।

मिल सका है क्या कभी सुख, मात्र तन के बंधनों में।

•

सितारे खिल जायें

बही पवन के संग
कोई तो आ जाये,
गीत मधुर मीठा सा
कोई सुना जाये।

आज किसी ने खोला
रस भंडारा है,
अमराई में आज
कोई मन हारा है।

अलसाई सी भोर
रस – भरी हो जाये,
अनजाने ही साँझ
सुनहरी हो जाये।

मीठी – मीठी कसक
किसी ने दे दी है
दिन का चैन, रात की
निंदिया ले ली है।

काली रैना आज
सितारे खिल जायें
छँट जाये बदली
बूँदनियाँ थम जायें।

o

भावनाओं की दिशाओं में बढ़ो

भावनाओं की दिशाओं में बढ़ो,
मूक सी संवेदनाओं को पढ़ो,
दीप में ही तेल केवल यह नहीं
जोति पाने के लिये बाती गढ़ो।

क्यों निरर्थक वेदनायें सह रहे,
आत्मा को यातना से भर रहे,
स्वच्छ मन निर्मल हृदय यदि चल सको
बढ़ चलो जिस ओर को नदिया बहे।

प्राणि जन्तु जीव सब ही एक हैं,
बसे धरती पर हों या हों चाँद पर,
है इसी में ज्ञान की परिपक्वता
हित अहित को ढूँढ़ लो यदि ध्यान कर।

गीत की स्वर-लहरियाँ सुमधुर लगें,
और – कानों में लग रस घोलने,
खो नहीं जाना कहीं यह भूल कर
गुप्त जो हैं भाव वह हैं खोलने।

बढ़ चलो उन्नति डगर पर ही सतत
रोष आवे और न आवे ईर्ष्या,
ठोकरों पर ठोकरें भी यदि मिलें,
शक्ति-साहस में न आवे क्षीणता।

शूल पग-पग भी मही चुनने लगें,
और मंजिल दूर भी दिखने लगे,
कण्टकों से खेल बढ़ कर देखना
शूल सब हैं फूल बन सजने लगे।

०

तुम न आये

जल उठे दीपक, हुई सन्ध्या,
शलभ ने चूम ली लौ,
तुम न आये।

बने प्यासे नयन निर्झर
कपोलों पर ढुले मोती,
कोयलिया कूकती पल पल
पिरोती पीर के मोती।

ढँके तारे हजारों,
रात की फैली चुनरिया,
तुम न आये।

सजा कर केश में गजरा,
नयन में तीर सा काजल,
ये घूँघट पारदर्शी सा,
सितारों से भरा आँचल।

करूँ पूजा तुम्हारी ही,
सजायें आरती का थाल बैठी,
तुम न आये

अरी बद्‌किस्मत ओ सिगरट

अरी बद्‌किस्मत ओ सिगरट,
धन्य तू और तेरा मरघट,
बनी तू मुख की शोभा और
बना क्रय-विक्रय मृदु बंधन

भाग्य पर क्यों करती क्रन्दन,
अरी बद्‌किस्मत ओ सिगरट।

तृप्ति तू देती जन-जन को,
खरीदा जिसने भी तन को,
उठाया ग्राहक ने कर में,
स्नेह समझी थी तू छल को।

उठा क्यों मन में उद्वेलन,
अरी बद्‌किस्मत ओ सिगरट।

धुँआ बन सुलग सुलग कर हाय,
छूट रहा था तुझसे संसार,
कर उठा हृदय हाहाकार—
अधर से हटा राख की झाड़।

अशुभ था पहला हो चुम्बन,
अरी बद्‌किस्मत ओ सिगरट।

कंटकों से प्रीति प्रतिपल

कंटकों से प्रीति प्रतिपल
चन्द्रिका से नेह पाला
प्रलय में करके बसेरा
आंधियों में दीप बाला।

आ मिलो अब तो प्रिये, हैं विरहिणी के नयन गीले।

घोर तम काली घटायें
अंक में अदृश्य कंपन
आरती का थाल कर में
पुष्प रोली और चन्दन।

देखने को चन्द्र-मुख, मन प्राण हैं चंचल रंगीले।

बिछाये थे नयन पथ में
रैन तारे गिन बिताई
ढली रैना दिवस बीते
प्रेम पाती पर न आई।

स्वप्न में ही आ मिलो अब साध ये साजन सजीले।

०

क्या बन्धु हुये तुम निर्मोही

क्यों कहते मुझको निष्ठुर तुम,
क्या बन्धु हुये तुम निर्मोही ?

अम्बर के घिरते मेघों में
नव-रंग कोई पाया तुमने
रिमझिम-रस सिंचित बूँदों में
कुछ मृदुल-मधुर पाया तुमने ।

क्यों हो इतने उत्कंठित तुम,
कुछ धैर्य धरो ओ मन मोही ।

पपिहे को पावस की बूँदें
चकवे को जैसे चाँद मिला,
अँधियारी काली रैना में
बिजली का सुन्दर फूल खिला ।

क्यों हो यों आकुल व्याकुल तुम,
क्या बन्धु हुये तुम अवरोही ।

सूने से आर्द्र नयन पल पल
क्या क्या कह जाते प्राण विकल,
मेरा अपनापन पीर मेरी
तुम देख न क्यों पाये चंचल ।

क्यों हो निःशब्द निरुत्तर तुम,
तुम बिन विचलित तन मन कोई ।

०

मोह नहीं है

मोह नहीं है इस जीवन से
चुकता है तो चुक जाये
रोक नहीं है नयन नीर पर
बहता है तो बह जाये।

भीड़ भरे कोलाहल में
हैं संबन्धों के घेरे भी
बांचे मोह-प्रेम की पोथी
विवदा में मुँह फेरे भी

मोह नहीं है आशाओं से
मिटती हैं तो मिट जायें
रोक नहीं अभिलाषाओं पर
छलती हैं तो छल जायें।

अनजाने ही बंधन बँध गये
जग ने भी स्वीकार किया
देकर पूर्ण-समर्पण क्यों फिर
हृदय से दुत्कार दिया।

रोक नहीं इस सुखद भोर पर
छिनती है तो छिन जाये
मोह नहीं दूधिया रैन का
ढलती है तो ढल जाये।

दुर्गम पथ है किधर मुड़ेगा
नहीं लेश भर ज्ञान हमें
क्षण– प्रति क्षण पर तिमिर बढ़ रहा
दिखते ग्रह प्रतिकूल हमें।

दोष नहीं अनजान डगर का
मुड़े जिधर भी मुड़ जाये
रोक नहीं है नयन नीर पर
बहता है तो बह जाये।

०

तुम नामकरण करते जाओ

मैं सुप्त उमंगो संग सोऊं,
तुम भोर भैरवी ही गाओ।

छिटके तारों के संग संग
चन्दा को बाहों में भर लूं,
शीतल मन्द झकोरों में मैं
नयन मूंद कर खो जाऊं।

मैं गुप्त गान गाती जाऊं,
तुम वीणा – वादक बन जाओ।

बहते अश्रु – कणों को रोकूं
ढांक छुपा लूं पलकों में
गंध सुगंधित सांसों की मैं
गूंथ सजाऊं अलकों में।

मैं मूक प्रणय को अपनाऊं,
तुम नामकरण करते जाओ।

एक नाम पूजा अपना,
एक ही नाम अधर पर है।
मूक भक्ति शोभित अन्तर में
एक आराध्य अमरतर है।

मैं तुझमें ही खोती जाऊं,
तुम खिंचते मुझतक आओ।

०

फिर भी इतना तो सुलझा दो

भावों को तरतीब न दोगे,
मंहके मंहके गीत न दोगे,
फिर भी इतना तो समझा दो,
छन्द रचे उनका क्या होगा?
इच्छाओं को तुष्टि न दोगे,
मनमोहक सी प्रीत न दोगे,
फिर भी इतना तो बतला दो,
स्वप्न सजे उनका क्या होगा?
आँचल में यदि भीख न दोगे,
हृदय को परितृप्ति न दोगे,
फिर भी इतना तो कह ही दो,
भीगे नयनों का क्या होगा?

नैया को यदि तीर न दोगे,
लहरों को संगीत न दोगे,
फिर भी इतना तो सुलझा दो
थकते मांझी का क्या होगा ?

०

हम दीपक संग जलने को तैयार सदा

हम दीपक संग जलने को तैयार सदा,
तुम बाती को और बढ़ाते यदि जाओ।

लिये कटोरा भीख प्रीत की माँगी जब,
बन्द द्वार के पीछे से दुत्कार मिली,
वापस लौट सड़क सूनी सी देखी जब,
लगा शून्य से भी जैसे फटकार मिली।

हम आँधी में चलने को तैयार सदा,
तुम पथ में भी साथ निभाते यदि जाओ।

थक कर पथ में लिया बसेरा है जब भी,
किसी पथिक ने ठोकर एक लगा दी है,
उठ कर चलने लगे लक्ष्य की ओर सदा,
पीर टीस हर, मन में ढाँक छुपा ली है।

हम लहरों संग तिरने को तैयार सदा,
तुम उस तट पर खड़े पुकारे यदि जाओ।

फूलों से माँगा पराग जब जब हमने
भँवरों ने हँस-हँस अट्टहास सुनाया है
सावन से जब भी है माँगी हरियाली
व्यंग्य लिये ज्यों पतझर भी मुस्काया है

हम पतझर सह लेने को तैयार सदा,
तुम सावन की आस बंधाते यदि जाओ।

मूक नयन की भाषा में भी यदि हमने
माँगा है वरदान मिलन का इक तुमसे
हृदय- विदारक हास दिखाया है सबने
और विरह की पीर मिली है बस तुमसे

हम बिछुड़न सह लेने को तैयार सदा,
तुम मिलने का धैर्य बंधाते यदि जाओ।

खिले हुये फूलों के लालच में हमने
हाथ को हरदम शूल चुभाये है
टूटी फूटी आशाओं के पावों में
हंस तब ही कुछ बंधन और पिन्हाये हैं

हम बंधन में बंधने को तैयार सदा,
तुम प्रतिपल वह बंधन कसते यदि जाओ।

. o

कौन बहारें लाया है ?

आशाओं के दीप जलाता,
कौन पुजारी आया है ?
आनन्दित सी पुलकित संध्या
नीले नभ पर छायी है
नारंगी गुड़िया ज्यों नीली
झील तैरती आयी है।
मुस्कानों के फूल खिलाता
कौन मधुर रस लाया है ?
संबंधों के तार सुरीले
हौले से झंकृत कर के
वीणा में संगीत नया
नव प्रणय गीत गुंजित करके।
झंकारों मे प्रीत जगाता,
कौन रागिनी लाया है ?
बौराई यह पवन बसन्ती
द्वार द्वार दस्तक देती,
संदेशा ज्यों परदेशी का
अनजाने छुप-छुप देती।
मधुमासी संदेश सुनाता
कौन बहारें लाया है ?

•

यह जीवन

यह जीवन इक दरिया है
इसको बहने दो,
यह जीवन एक निशा है
इसको ढलने दो।

इस जीवन का हर पल
कुछ कहने को आतुर,
कह लेने दो निःशंक
इसे कह लेने दो।

यह जीवन इक पुस्तक है
इसे पढ़ने दो,
यह जीवन मीठी गंध
इसे कुछ चखने दो।

इस जीवन का हर पल
कुछ करने को आतुर,
कर लेने दो मनचाहा
सब कर लेने दो।

यह जीवन एक कसक है
इसे कसकने दो,
यह जीवन इक ज्वाला है
इसे धधकने दो।

इस जीवन का हर पल
जब जलने को आतुर।
जल जाने दो तिल तिल
करके जल जाने दो।

यह जीवन इक लहर है
इसे मचलने दो,
यह जीवन एक भँवर है
इसमें फँसने दो।

इस जीवन का हर पल
जब छलने को आतुर,
छल लेने दो मन भर
तन- मन छल लेने दो।

०

नयनों में जल आया होगा

सांध्य समय आँचल पसार कर
जिसका कुशल मनाया होगा,
क्षण भर तो उस परदेशी के
नयनों में जल आया होगा।

बिन सावन बरखा न भाये,
बिन मौसम की धूप भली ना,
बिन साजन के रैन न भाये,
बिन भँवरे के फूल भले ना।

दूर देश अनजाने पथ से
चले गये परदेशी प्रीतम,
घड़ी दो घड़ी प्रीत सजा कर
छिपे कहाँ देकर सुधि शीतल।

नयन मूँद कर जिसकी छबि को
हृदय में बिठलाया होगा,
क्षण भर तो उस चिरपरिचित के
नयनों में जल आया होगा।

राह कंटीली अंधियारी थी
घन काले चहुँ-ओर घिरे थे,
अनजानी परदेश डगरिया
परदेशी के नयन फिरे थे।

आँधी पानी के झोंकों में
छोड़ गये एकाकी क्यों कर,
युग - युग की थी प्रीत पुरानी
दो पल में भुठलायी क्यों कर।

कांटों पर चलकर भी जिसको
फूलों सा महकाया होगा,
क्षण भर तो उस निर्मोही के
नयनों में जल आया होगा।

०

मुक्त-छन्द

रंगों में डूब जाने दो

कुछ गाने दो-
मधुर मधुर कुछ गाने दो।
गीत मीठे,
छन्द अनूठे,
प्रीत सच्ची,
रीत झूठी
हर दिशा मनभावनी,
मनमोहिनी, छवि एक पाने दो
आज पाने दो-
रंग गहरे,
तन सुनहरे,
चूनरें झीनी,
अंग झलकें,
हर नयन में शोख आमन्त्रण
निमन्त्रण आज पाने दो।
रंग जाने दो
रंगों में डूब जाने दो।

०

गीत गा लो-आज

मुस्कुरा लो आज
हँस लो-
फिर मिलेंगे-
ये रंगीले दिन कहाँ।
गीत हैं उठते
फिजा महके
एक अरसे बाद
मन बहके।
गीत गा लो आज
सुन लो-
और सुना लो आज
फिर मिलेंगे-
गीत को ये स्वर कहाँ।
फूल को चख कर
उड़ी तितली कि
किसके मन पर
टूटती बिजली
रस चुरा लो आज
चख लो
और चखा लो आज
फिर खिलेंगे-
रस भरे ये गुल कहाँ।

•

अब तो पहचान लो

कितने ही–
द्वारों पर
दस्तक दी तुमने
आज तक।
छांव मिली
कितनी छतों की
आज तक ?
कहाँ मिले
मोती और हीरे
कहाँ चुभे
सुकुमार
तलवों में कांटे
झोली में
पुष्प भेंट
डाली किसने
कण्टकों सी
प्रीत भेंट
दी है किसने
तुमने भी–
एक हाथ बांटी
मुस्कान

और-

भर चले किसी के

मन में थकान

किन आँखों ने

दी तुम्हें

झील सी गहराई

और किनमें

पायी तुमने

नाली के जल

जैसी उथलाई

किन अधरों ने

छूक कर

पिलाया अमृत तरल

और किन अधरों ने-

कहा अमृत,

पिलाया गरल

कहाँ, कौन, कैसा

है द्वार

अब तो पहचान लो

बाकी बचे

कितने ही द्वार

देनी है दस्तक

जहाँ आज के बाद।

•

गुल मेंहदी

एक नन्हां सा बेहन
मेरे आँगन के कोने में
किसी ने लगाया।
मैं नित्य उसे देखती हूँ
दिन-प्रति-दिन वह बढ़ता जाता है।
हर दिन नयी कोपलें
नयी पत्तियाँ उसमें आती हैं
पत्तियाँ भी बढ़ती जा रही हैं
उसी बेहन के साथ।
धीरे-धीरे वहाँ
एक गुलमेंहदी बन जायेगी
और-
एक दिन वह भी जवान होगी।
फिर ?
फिर उसमें कलियाँ,
कलियों के बाद फूल भी खिलेंगे
पर फूलों की कोमल पंखुड़ियाँ
जल्दी ही, हल्के हवा के झोंके से
झड़ जायेंगी धरती पर।
गुलमेंहदी में छोटे फल भी आयेंगे।
और-
और एक दिन वह भी चटख जायेंगे

इनमें से बीज कुछ
धरती पर झड़ जायेंगे,
मिट्टी में मिल जायेंगे,
पूर्ववत अनगिनत नन्हें बेहन
गुलमेंहदी के उग जायेंगे।
पर, वह कल की जवान गुल मेंहदी
उदास, ठूंठ खड़ी रह जायेगी।

०

बंदिशें-मीठी लगा करतीं कभी

बंदिशें
मीठी लगा करती कभी।
दूरियों ने ही
निकट का सुख कहा,
हर मिलन का सुख—
बिरह का दुःख बना।
दूरियाँ भी
निकटता लगतीं कभी।
बंदिशें
मीठी लगा करतीं कभी।
मन किसी से—
मगर मिलता नहीं।
प्रीत सच्ची—
पारखी मिलता नहीं,

रीतियाँ भी
मन मिलाती हैं कभी।
बंदिशें
मीठी लगा करती कभी।
मन बहकने दो—
मधुर पल के लिये,
है यहाँ क्या—
है जो प्रतिपल के लिये।
भटकनें भी
जिन्दगी बनती कभी।
बंदिशें
मीठी लगा करती कभी।
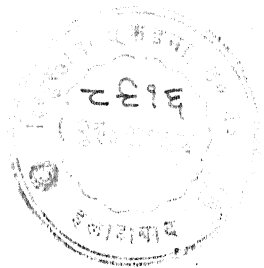
अन्नबिंधा मन्न

आज मौसम रास आया।
चिर विरह को
भेद चुपके
आज कोई पास आया।
अनोखी इक प्यास लाया।

दुल्हनियाँ सी
सजी गलियाँ
कुँआरी सी भई कलियाँ
नयन सूने जो
उनमें कौन
व्यापक आँजने आया।
अनछुई इक लाज लाया।

खिले हैं फूल रंगीले-
बढ़ाने मन लगा
पेंगें,
मन में, घर सा
बनाता कौन-
प्रतिपल आ समाया।
अनबिंधा मन बींधने आया॥

०

अक्षुण्ण रहने दो

मैंने नहीं चाहा
विश्लेषण करना
अपने कर्मों या--
कुकर्मों का,
इस भयावह, स्वार्थी
संसार के सामने।
मैंने नहीं चाहा कभी
हवा के तेज
झकोरों में भी
मेरे सूखे, बंधे बाल
अनजाने ही खुलकर
बिखर-बिखर जायें
और--
मस्तिष्क का भारीपन
कुछ ही पलों के लिए
अलग हो जाये मुझसे।
या कि--
दो तप्त अश्रुकण
अकथ कुछ
कह जायें जग से।
नहीं चाहा कभी
कि कोई आये

दया और सहानुभूति की
चादर आकाशी फैलाये
जिसके तले
मन घुट-घुट कर रह जाये।
फिर—
मेरे रुँआसे चेहरे को
दो मजबूत हथेलियाँ
जकड़कर
स्वप्नवत सब
भूल जाने को कहें।
'भूलना' या 'भूल जाना'
कल्पना इक असंभव सी।
क्या प्रयोजन फिर भला
झूठी सपथ से?
सत्य को सत्य
सत्कर्म को सत्कर्म
कलंक को कलंक
कुकर्म को कुकर्म ही
बना रहने दो
अक्षुण्ण रहने दो।

o

दस्तक

अनुभव के,
चबूतरों पर
शब्दों के जाल विस्तृत
ढंक रहे
जर्जर व्यतीत को
व्यर्थ के प्रयास से।
विस्मृत से विगत में
कुछ था, या कि--
कुछ भी नहीं था,
माँग लो गवाही
और मांगते ही जाओ
अनुत्तरित प्रश्नों के
अन्तहीन दायरों में
कोई बिम्ब ना मिलेगा
प्रश्न–प्रश्न ही रहेगा
वापस तुम्हारे द्वार पर
दस्तक दिया करेगा।

०

अँजुलि भर स्मृति

कंपित कर थामे हैं
अँजुलि भर स्मृति,
ढँक रहा व्यतीत को
अन्यमनस्क मन,
आँखों की कोरों में
क्षीण जर्जर स्वप्न ।
बादल भर लाते
निज तन में विद्युत,
शीतल जल सागर का
जलता तिल-तिल ।
हँस-हँस क शलभ
शिखा के संग जलता,
भींगा मन-उपवन
बनता निर्जन,
व्यथा विस्तृत
क्षण-प्रतिक्षण,
बढ़ रहा ज्यों-ज्यों
तिमिर घन,
दृढ़ से दृढ़तर
हो रहा अज्ञात बंधन ।

बैसाखियाँ

हमने तो खोजीं
सदा बैसाखियाँ,
हर तरफ
हँसती दिखी थीं पाखियाँ।
इन्द्रधनुषी स्वप्न-
मन में थे संजोये
मन मृदुल मोती
अपरिचित सी सुई से
एक धागे में पिरोये।
मिल नहीं पाईं
मगर बैसाखियाँ
व्यंग्य बिखराती
उड़ीं सब पाखियाँ।
इन्द्रधनुषी स्वप्न
बिखर मिट गये,
तन्तु कच्चे ने
हमें दे दी दगा,
झर गये मोती मृदुल
और रह गया
यह मन ठगा।

●

याद्दाश्त ही मर जाये

जो लिखो
ऐसा लिखो
जब कभी भी तुम लिखो
सत्य की कसौटी पर
आंख मूंद खरा उतर जाये।
मत लिखो इतना
कि पूरा 'डस्टबिन' भर जाये।
कह सको
यदि कुछ
सभा में कहने का अवसर मिले
नाप और तौल कर
संक्षिप्त सा इतना कहो
सुन-सभी, सबही ग्रहण कर जायें
मत कहो इतना कि-
श्रोता ऊब कर उठ जायें।
सुन सको
यदि कुछ-
कहीं सुनने का यदि अवसर मिले
याद रक्खो
बस वही
जिससे न सिर फिर जाये
याद मत इतना करो,
याद्दाश्त ही मर जाये।

●

भीगी आँखे, सूखे ओंठ

सुना करते थे-
रात की सियाही को
सुबह की सुनहरी किरणें
आते ही मिटा देती हैं।
पतझड़ के सूखे पेड़ों को
वर्षा की बूँदें
हरियाली दे देती हैं।
इतना ही नहीं-
किसी के मिट्टी-सने पैरों को
कभी सुन्दर कालीनों पर
नसीब चलना भी होता है।
और भी-
भीगी आँखों के सूखने-
सूखे ओठों के-
भीगने का भी
मौसम आता है।
और तब-
सोचा करते थे हम
होगा ऐसा ही,
एक दिन सचमुच।
मगर हुआ कुछ
तो बस, केवल,

इतना ही–
रात की सियाही
और भी गहरा गयी।
पतझड़ के–
सूखे पेड़ों की
बची-खुची
पत्तियाँ भी झड़ गयीं,
मिट्टी सने पैरों पर
कीचड़ की एक पर्त
और चढ़ गयी।
और–
भीगी आँखें
भीगी ही पथरा गयीं
सूखे ओंठ–
और भी पपड़िया गये।

वह सेवा निवृत्त है

चाँद
आज नहीं निकला।
तारे
एक अद्भुत
ज्योतिपुञ्ज बिखरते हैं
मौन प्रकृति पर।
मद्धम से प्रकाश में
विस्तृत आकाश तले
हरीतिमा से भरी
कोमल, क्वांरी, कोपलें
मधुर स्नात सी, थिरक उठती हैं
आँखें मुंद जाती हैं।
अगले ही पल
अनदेखा, अनजाना
क्षुद्र बादल का टुकड़ा
दिग्भ्रमित सा
निकट से निकटतर
आने लगा।
परकोटे के गवाक्ष से
देखा जब चांद ने
टीस उठा अन्तरमन
कांप गया मानस—

'शैशवी मुस्कान भरे
नन्हें शिशु तारों को
अपने सघन साये में
छुपा तो न लेगा ?'
कसमसा कर रह गया
मार मन बैठा रहा
मृत्यु तुल्य कष्ट को
अमावस के सत्य को
स्मरण कर सह लिया
वह संत्रा निवृत्त है।

०

माँ के वियोग में

वो देखो
सुदूर हरे मैदान में
एक हिरनी चर रही है।
छोटी-बड़ी
घास की कोमल कोपलें
निर्दयता के साथ
चरती जा रही है।
प्रसन्न है, मस्त है
कुछ क्षणों तक चरकर
खाली हुए, पेट को भरकर

एक घने वृक्ष की छाया में
क्षणिक विश्राम की माया में
चिन्ता और मनन को
भर अपनी मन और काया में
जा बैठी ठंडी छाया में।
तभी—
एक अनजाना, निर्दयी शिकारी
क्षुधा से त्रस्त
भटकता आ पहुँचा
हिरनी देखी और
क्षुधातुर जिह्वा से रस टपका।
चढ़ा तीर, खींची प्रत्यंचा
एक चीख के साथ
हुई तब घायल हिरनी।
पल दो पल
चेतना रही और तड़पन भी
हुई शान्त फिर,
और सो गयी चिर-निद्रा में।
हिरनी मृत
जीवन से मुक्त
बढ़ा शिकारी आगे तब,
उदर चाल कर,
ले कृपाण, जब देखा उसने
नेत्र फटे – और फटे रह गये।
जीवन के थे चिन्ह
बचे कुछ
सुख निद्रा में सोया था
नन्हा मृग-शावक, दूजे पल
माँ के वियोग में रोया था।

०

कूड़े का ढेर (गरीबी)

कूड़े का ढेर
मच्छरों के फेर
जीवन जंजाल
रोटी कपड़ों के फेर।
रखा (घर को) जनसंख्या ने
चौतरफा घेर।
घर में है सीलन
चिपचिपी दीवारें
अपने दुख दर्द में
हम किसे पुकारें।
ठिठुरते अंग-अंग
कड़कड़ाती सर्दी,
थोड़ी तनख्वाह
फटी सबकी वर्दी।
मकान का किराया
देने में अक्सर ही
हो जाती देर।
आँगन में बैठ
करता मूड डेवलपमेन्ट
आया यमराज (मकान मालिक) तभी
लेने को रेण्ट।
हुआ सत्यानाश
बनी कविता न शेर
कैसा अन्धेर
बचा कूड़े का ढेर।

o

परिवार-नियोजन

सास-बहू वार्ता

सास --

"सास बहू से कह रही
बनकर सफल सुजान-
'मेरे तो थे छः तेरे हों-
बारह, तब है आन।

'नहीं हमारे काल में
था हर कुछ कण्ट्रोल,
और न ही हमको लेना
पड़ता था हर कुछ मोल।

'गेहूँ, चावल चना, मटर
सब्जी औ मिर्च मसाला
घटे अगर ले आता था
तेरे फूफा का साला।

"आज दशा वैसी नहीं
हाथ तुम्हारे लाज
हमें चाहिए हर दुकान पर
अलग-अलग इन्चार्ज।"

बहू—

"सासू जी क्या तुम्हें हुआ
जो करती ऐसी बात,
क्या कहती हो लाज तुम्हारी
बसी मेरे ही हाथ ?

"यदि यह ही सच है तो
सासू जी तुम पछताओगी,
अपने से दूने तो क्या
आधे भी ना पाओगी।

"एक दिखेगा नाक पोंछता
एक मल रहा आँख,
कोई चोट चपेटें खाकर
रहा दर्द से काँख।

"बिना फीस बैठेगा कोई
कोई होगा फेल
जायें आउट-स्टेशन तो
बुक होगी पूरी रेल।

"मन में हर पल कुढ़ते रहकर
क्या देंगे हम प्यार;
मांग न पूरी कर पायेंगे
उल्टा देंगे मार।

"अलग-अलग दूकानों का
मैं भार अकेले लूँगी,
अलग-अलग इन्चार्ज बनाकर
आफत मोल न लूँगी।

गेहूं, चावल, चना, मटर
या लाना हो तरकारी
बड़े चैन से ला सकती
दो बच्चों की महतारी।

"लगता पिछले युग में
उड़ा रहता था मन का फ्यूज
तभी दिखाई देते हैं
हर घर में लम्बे क्यूज।

०

जन्म गाथा लाला

चैन और आराम से
हर पल हर घड़ी
थी मरी पड़ी।
बिस्तर पर पसरे हैं--
एक पर हम
दूसरे पर अर्धांगिनी हमारी।
रोगों में लिपटा

मैं कराहता
और--पीड़ित प्रसव-पीड़ा से बिचारी।
एक शैय्या पर
'नवजीवन'
खोल रहा आँखें
दूसरी पर--क्षण प्रतिक्षण
चूक रहीं सांसें।
हैं घर में--
बैठी छः क्वाँरियाँ,
जीविका के नाम पर,
छः आलू की क्यारियाँ।
जेष्ठा पैंतीस की
और कनिष्ठा अट्ठाइस की,
प्रतीक्षा थी जिसकी
अब आई
वह साइत थी--
स्वर्ग की सीढ़ी लगाने
जनम गया लाला
परलोक बना पाने की
चाहत में ही तो हमने
यह लोक नष्ट कर डाला।

•

त्रिकोण स्तूप

रात–
आधी, टिकी रात
साँय – साँय कर रही
सर्दी की बात,
अँधियारी रात।
कुत्ते की भौं भौं
दर्द भरी आवाज
अनसीखे बादल का
बेसुरा साज।
पर कुछ है राज
झाँक जब बाहर
खोल कर द्वार
चूँ चूं सी सुन पड़ी
सड़क के उस पार।
मन के हिले तार
पास गये उसके
बिलकुल ही पास
देखा इक मादा संग
छः सात नव जात
कुत्ते की जात।
क्षुधा घोर,
घोर प्रसव-पीड़ा–

खा लिया अपने उदर का
सद्यजात कीड़ा
विचित्र क्रीड़ा ?
संतान संख्या का
ऐसा घृणित रूप
और ऐसा परिणाम
देखा तो मन में बसा
एक ही स्वरूप
पोस्टर में बना हुआ
त्रिकोण स्तूप ।

०

कन्ट्रोल का जमाना

देखो जिधर उधर ही लाइन
कन्ट्रोल का जमाना है
नहीं कहीं मिलता है कुछ भी
कहने को मनमाना है।
दूध बिक रहा दो भैंसें हैं
देती हैं जो छः छः कीलो
छः छः मिल के बाहर हां
बारह कीलो पानी भी लो।
सुबह हुई और सात बज गये
सब आये दुकान डट गये
किन्तु मिला दस बारह को ही
बाकी उम्मीदवार छँट गये।

'सरकारी गल्ले की दुकान'
हर माल मिलेगा सस्ता ही
किन्तु गये जब भी लेने को
हालत पायी खस्ता ही।

गेहूँ में जौ, जौ में गेहूँ
मिला रहा चीनी में सूजी
चावल में कुछ कंकड़ ज्यादा
बना रहा बस अपनी पूंजी।

तेल नहीं मिट्टी का मिलता
बहुत मिलावट सरसों में
साबुन भी दुर्लभ हो जाता
कभी लगाओ बरसों में।

बीबी लाइन में खड़ी
लेने की खातिर दूध
जाना है कन्ट्रोल और
पानी की नही है बूंद।

बकरी को नहीं मिलती पत्ती
घोड़े को है मिलता घास नहीं
केवल दो तारीख हुई न है
कौडी फूटी पास नही।

अभी बची लाने को सब्जी
नौकर रखना खास नही
और 'चाइल्ड-कन्ट्रोल' करो
ज्यादा राशन पास नहीं'।

०

गजल

चाँद रूठा नहीं है

चाँद रूठा नहीं है सितारों से पर,
चाँदनी का ही मन आज मैला हुआ।

देखा है चाँदनी को बिखरते हुये,
औ तारों को देखा चमकते हुये।
सबने खिलते हुये फूल देखे मगर,
देख पाये न उपवन इक उजड़ा हुआ॥

सुबह मोती बिछे मखमली घास पर,
खिलते चेहरे मिले, भीगी आँखें मिलीं।
उठ रही हैं किसी घर से किलकारियाँ,
और कहीं मुख गरीबों का फैला हुआ॥

तन को गंगा में धोना ही शुचिता नहीं,
स्वच्छ मन अपना कर लो वही भक्ति है।
दान – पूजा न – ही अर्चना पुण्य है,
त्याग में ही सुखों के परम शक्ति है॥

●

कह नहीं सकते

कह नहीं सकते हैं कुछ भी खो करके,
हाल दिल का दिल ही से कहने में डर लगता है।
पात हर शाख से जब टूट गया,
छांव को हाथ लगाने में भी डर लगता है।
हर लहर दूर किनारे को छूके जा पहुंची,
नाम मझधार का लेते हुये डर लगता है।
द्वार पर सजता हुआ पायदान बहुत है सुन्दर,
पाँव कीचड़ से सने रखने में डर लगता है।
दिल में कुछ दर्द तो उठा लेकिन,
आँख को अश्क बहाने में भी डर लगता है।

०

जल रही

जल रही किसकी चिता, किसका हृदय है फुँक रहा
दूर धरती के कदम पर, आसमां है झुक रहा।
है न मरघट को ये चिन्ता, कितने पंजर जल गये
कितने उसके वक्ष पर आ, हाथ अपने मल गये।
बादशाहों को खबर क्या, वीर गति किसको मिली
सलतन बाहों में भर ली, जीत जो सेना चली।
क्या पता तूफान को, घर उजड़ कितने ही गये
थे पड़े सोये जो शोले, भड़क दो पल में गये।
आठ दस सन्तान अपनी, छोड़ जो पीछे गये
क्या खबर उनको कि, किन-किन नालियों में वे बहे।

०

बन के पायल

बन के पायल हम किसी के पाँव की
चाहते हैं हर घड़ी बजते रहें।

चुभ न जाये पाँव में काँटे कहीं
पाँवड़े बन पथ में हम बिछते रहें।

दूर तक चलना हो तपती धूप में
छाँह बन पथ वृक्ष हम करते रहें।

मन जो होवे अनमना उनका कभी
मधुर ध्वनि बन कान में बजते रहें।

उनका इक आँसू न गिरने दें कभी
उनकी हर मुस्कान पर मिटते रहें।

दूर दो पल को भी हों जग में कभी
नाम उनका हर घड़ी जपते रहें।

०

ये दुनियाँ है

ये दुनियाँ है अंधों की, दो आँख वाले
बता तो जरा तेरी हालत है क्या।

सज के है घूमता हर कोई देख ले,
देख सकता है ही, नहीं और सब,
पर तरस कर तू रह जायेगा जब कभी,
होगा अरमान देखे तुझे भी कोई।

आयेंगी आँधियाँ और पतझार भी,
सबको सावन करेगा सराबोर भी,
बट के बाती जलायेगा तू दीप इक,
देखेगा चाँद-तारे, पकी भोर भी।

बोल सुन्दर-असुन्दर कहेगा किसे,
'हाँ' में 'हाँ' भी मिलाने को है क्या कोई,
नीर बहता तेरी आँख से देख के,
सोख लें, हैं क्या ऐसे अधर भी कोई।

०

जमाने की हवा

ये जमाने की हवा देख किधर बहती है।

आदमी कुछ भी नहीं कहता है मगर,
सिर्फ परछाई ही अभी राज बयां करती है।
जिन्दगी देखी है जमीं पर औ दरख्तों पर भी,
जिन्दगी ही जिन्दगी को खत्म किया करती है॥

ये जमाने की हवा देख किधर बहती है।

अपनों को अपना नहीं कह रहा इन्सान यहां,
जलती हर आंख में बदले की आग हो जैसे।
बाप को बाप ही कहने में लजाता बेटा,
खूनी रिश्तों के सभी अर्थ है बदले जैसे॥

ये जमाने की हवा देख किधर बहती है।

कौन अनजान सी राहों पे बढ़ा जाता है,
जानी-पहचानी सी डगर पर भी कोई भटका है।
फूल तो बाग में टहनी पे सिर्फ फूला है,
बिखरी खुशबू से हवा दूर-दूर महकी है॥

ये जमाने की हवा देख किधर बहती है।

०

गीत गाओ न यूँ

गीत गाओ न यूँ आँख भर आयेगी,
प्रीत की कोई तस्वीर खिंच जायेगी।

रात की ओढ़नी में सितारे टँके,
चाँदनी आज दीपक से शर्मायेगी।

फूल हैं फूल ही जिनको कहते रहे,
अब तो कांटों से भी कुछ महक आयेगी।

साज को यूँ उठा आस सोई जगे,
गीत में पीर कोई कसक जायेगी।

बांध मत पांव में यूँ ही घुँघरू अभी,
रात ढलने दे वरना ठहर जायेगी।

०

पैसे पर

पैसे पर तन बिक जाते हैं
माटी में मन मिल जाते हैं,
आंसू औ आहों के बल पर
जीवन का मूल्य चुकाते हैं।

क्या कीमत उन अरमानों की
बलिबेदी पर जो चढ़ा दिये,
क्या कीमत उन इन्सानों की
जो खुद ही खुद को ठगा चुके।

अनजानी राहों पर चलकर
सपनों का महल बनाते जो,
छत पड़ पाने से पहले ही
वे महल सदा ढह जाते हैं।

कागज के फूलों की खुशबू
पर मस्त हुये जो झूम उठे,
जब देखा जा गहराई में
केवल कागज ही शेष बचे।

०

तड़पन

जो न किसी की खातिर तड़पा
क्या जानेगा तड़पन कैसी,
किसका हृदय कभी न धड़का
क्या जानेगा धड़कन कैसी।

पीड़ा का जो रूप न जाना
विरह व्यथा से जो अनजाना,
उससे पूछो तो क्या वह
बतला पायेगा बिछुड़न कैसी।

आंसू जिसकी पलकों पर से
कभी किसी के लिए न ढुलके,
सागर मचले किसी नयन में
वह क्या समझे गरजन कैसी।

जिसका मौन बना देता है
मुखर किसी अधरों को,
वह क्या कभी बता पायेगा
मौन मुखी पीड़ा कैसी।

आज की रात

आज की रात मुझको, न नींद आयी क्यों ?

देख कर उस चमकते हुये चांद को
नन्हें तारों से घिर जो चमकता रहा
दूर जैसे खिली रात रानी कोई
भर के खुशबू से प्याला छलकता रहा।

आज की रात मुझको, न नींद आयी क्यों ?

जागती मैं रही जगते कितने रहे
है नहीं एक सा सबका जगना मगर
चांद भी जागता, देश का बादशाह
कितनी आंखें खुली होंगी फुटपाथ पर।

आज की रात मुझको, न नींद आयी क्यों ?

जागती है ये नदियां, मचलती हुई
जागते रहते दोनों किनारे सदा,
जागता है तड़पता कोई भूख से
कोई कहता है, रक्खूँ मैं दौलत कहां ?

आज की रात मुझको, न नींद आयी क्यों ?

एक घर का दिया बुझ रहा है कहीं
झनकी पायल, ठनकी है बोतल कहीं,
घर से निकलती है डोली इधर
द्वार से एक के उठ के अर्थी चली।

आज की रात मुझको, न नींद आयी क्यों ?

•

भाग्य लिखा नन्हें फूलों का किसके सुन्दर हाथों ने ?

खिल कर अनजानी राहों पर हर पल जो मुस्काते हैं,
जीवन हंस-हंस जियो, यही हर राही को समझाते हैं।
खा कर ठोकर हरपग पर, वह राही क्या हँस पयेगा,
शूल बिछे हों कदम-कदम पर, जिसकी लम्बी राहों में।

भाग्य लिखा जगमग दीपों का, किसके सुन्दर हाथों ने ?

दीपशिखा के संग में जल कर भी देखे परवाने हँसते
दीप जलाये दीप बुझाये, हंस-हंस कर आँधी में कितने
जल कर दीपक बुझ जाते हैं, बुझ कर कब जल पाये हैं
दुःखद कथा कह डाली किसकी, सूनी-सूनी आँखों ने ?

भाग्य लिखा रसमय मधुऋतु का, किसके सुन्दर हाथों ने ?

कभी-कभी तो हर ऋतु में, मधुमास रचाया जाता है
और कभी टूटे मन को, असली मधुमास रुलाता है
डूब चुकी जब अश्रु सिंधु में मन की वाणी
चूर-चूर कर दिया हृदय पल-पल टूटी साधों ने

क्या लिखूं

क्या लिखूं लेखनी मौन सी हो गयी,
गीत लिक्खूं मगर प्रेरणा चाहिये।

आँधियों में जलाने दिया तो चले,
लौ बढ़ेगी मगर साधना चाहिये।

दूर तट दीखता नाव मझधार में,
तीर पाने की पर कामना चाहिये।

साथ जो चल रहा हमसफर देख लो
रात-दिन त्याग की भावना चाहिये।

बाँधने को तो तुम बांध लो सृष्टि को,
हो समर्पण तभी बांधना चाहिये।

●

शुद्धि पत्र

				अशुद्ध	शुद्ध
पृष्ठ	२	पंक्ति	२०	तत्र	तम
,,	११	,,	३	ही	हो
,,	११	,,	२१	मही चुनने	यदि चुभने
,,	२०	,,	१४	छूट	हरदम ही
,,	२४	,,	६ के बाद छूट		प्रणय रंगीन पाने दो
,,	२४	,,	२	,,	और हँसा लो आज
,,	४४		५	(घर के)	(घर की)
,,	४६	,,	८	बादल	बादक
,,	४६	,,	११	झाँक	झाँका
,,	४६	,,	१२	कार	कर
,,	५१	,,	१८	घस	वास
,,	५५	,,	४	ही	तूही
,,	५६	,,	३	किसका	जिसका
,,	६०	,,	१८	ठनकी	ठनकती